केवल रजिस्टर्ड मेडिकल प्रैक्टिशनर्स के लिए

डाक्टर प्याज

लेखक :

डा० गंगा प्रसाद गौड़ 'नाहर'

एन० डी०, प्राकृतिक चिकित्साचार्य
प्रधान चिकित्सक भारतीय प्राकृतिक विद्यापीठ कलकत्ता

तथा

श्री एस० पी० मेहता

मेडिकल रिसर्च स्कालर
(कई दर्जन एलोपैथिक पुस्तकों के लेखक तथा श्रीमती इन्द्रा गांधी प्राइम मिनिस्टर भारत सरकार से 'ताम्र पत्र' पुरस्कार प्राप्तकर्ता)

प्रकाशक:—

मैडिकल हाउस
३६५६, कुतब रोड, दिल्ली

मूल्य १.२५ रुपया

केवल रजिस्टर्ड मेडिकल प्रैक्टिशनर्स के लिए

डाक्टर प्याज

लेखक :

डा० गंगा प्रसाद् गौड़ 'नाहर'

एन० डी०, प्राकृतिक चिकित्साचार्य
प्रधान चिकित्सक भारतीय प्राकृतिक विद्यापीठ कलकत्ता

तथा

श्री एस० पी० मेहता

मेडिकल रिसर्च स्कालर
(कई दर्जन एलोपैथिक पुस्तकों के लेखक तथा श्रीमती इन्द्रा गांधी प्राइम मिनिस्टर भारत सरकार से 'ताम्र पत्र' पुरस्कार प्राप्तकर्ता)

प्रकाशक:—

मैडिकल हाउस

३६५६, कुतब रोड, दिल्ली

मूल्य १.२५ रुपया

भूमिका

हर घर में प्याज़ प्रत्येक सब्ज़ी के साथ या अकेला हीं प्रयोग किया जाता हैं। परन्तु यह बात बहुत कम लोग ही जानते हैं कि प्याज़ से मनुष्य कें तमाम रोगों की चिकित्सा की जा सकती है। इससे ऐसे २ असाध्य रोग भी दूर किये जा सकते हैं जो बड़ी बड़ी दवाओं से दूर नहीं किये जा सकते हैं। इसी कारण इस पुस्तक का नाम "डाक्टर प्याज़" रखा है।

इस पुस्तक में प्याज़ के संसार के बड़े बड़े चिकित्सकों के अनुभूत योग, प्याज़ से असाध्य रोगों की चिकित्सा विस्तारपूर्वक लिखी गई है। आशा है कि आप इस पुस्तक को पढ़कर अपने रोगियों को स्वस्थ बना सकेंगे।

लेखक

विषय सूची

नाड़ी संस्थान के रोग

कान, आंख, मुंह, दांत और गले के रोग

श्वास यन्त्र (नाक और फेफड़ों) के रोग

रक्त संस्थान (हृदय, रक्त तथा त्वचा) के रोग

डाक्टर प्याज़

संस्कृत में एक उक्ति—'जगाम चेंतु जगती पलांडु' अर्थात् संसार में प्याज का आगमन, उसके द्वारा संसार को विजय करने के लिए ही हुआ है। भाव यह है कि प्याज़ में इतने अत्युत्तम गुणहैं जिनके द्वारा वह समस्त संसार पर अपना प्रभुत्व जमाने की क्षमता रखता है। प्रसिद्ध मोटर व्यवसायी विलियम मोरिस ने भी एक जगह लिखा है—प्याज़ जैसी अलभ्य और अमूल्य वस्तु प्रदान करने के लिए मनुष्य को चाहिए कि वह ईश्वर को कोटिशः धन्यवाद दे। स्वादिष्ट होने के अतिरिक्त प्याज़ एक अपूर्व शक्तिवर्द्धक वस्तु है। जीवन के लिए उपयोगी अन्य मूल्यवान से मूल्यवान वस्तुएं भले ही न मिलें, परन्तु प्याज़ नित्तप्रति सेवनार्थ भगवान सबको दे।

प्राचीन हिन्दू शास्त्रों में प्याज़ की महिमा—डा० पट्टाभि-सीता रामैया ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'फेदर्स एन्ड स्टोन्स' Feather and Stones में लिखा है कि अठारह पुराणों से तो हम सभी परिचित हैं, पर गुजरात में एक उन्नीसवां पुराण भी है। उसका नाम है 'कांदा पुराण' स्कंद पुराण नहीं, कांदा यानी 'प्याज़-पुराण'।

कहते हैं, एक बार एक तपस्वी ने भगवान शंकर को प्रसन्न करने के लिए घोर तपस्या प्रारम्भ की। तपस्या पूर्ण होने पर भगवान शंकर उसके सम्मुख प्रगट हुए और पूछा—तुम क्या चाहते हो ?

तपस्वी ने उत्तर दिया—"प्रभो ! मैं अपने लिए कुछ नहीं चाहता। कलियुग आ रहा है और कहा जाता है कि कलियुग में

मनुष्य अल्पायु होंगे। अतः मैं केवल ऐसी युक्ति चाहता हूं जिससे मानव दीर्घायु हो सके।"

शंकर जी ने उत्तर दिया—मैं तो केवल विनाश करने वाला देवता हूं। इसके लिए तुम ब्रह्मा की उपासना करो। इतना कहकर शंकर जी अन्तर्ध्यान हो गये।

तपस्वी ने ब्रह्मा की उपासना आरम्भ कर दी। तपस्या से प्रसन्न होकर ब्रह्मा जब आये तो उन्होंने उत्तर दिया "मेरा काम केवल सृजन करना है। इसके लिए तुम विष्णु की उपासना करो।"

अन्त में तपस्वी ने विष्णु की उपासना की। विष्णु प्रगट हुए और बोले—"तुम्हारी कामना को तो मैं भी अकेले पूर्ण नहीं कर सकता। इसके लिये हम तीनों को साथ बैठकर विचार करना होगा।"

फलतः ब्रह्मा, विष्णु और महेश—तीनों ने सम्मिलित रूप से भक्त पर अनुग्रह करके अपने अपने अंश से एक नयी वस्तु को जन्म दिया। यह नयी वस्तु 'प्याज' थी। प्याज के ऊपर कमल—कली के समान जो उभरा भाग है, वह ब्रह्मा का अंश है, ताम्र रंग महेश का तथा उसकी शंख सी आकृति विष्णु का अंश है।

त्रिदेव के इस अंश दान से उत्पन्न प्याज के सेवन द्वारा कलियुग में लोग धर्म परायण और दीर्घजीवी होने लगे। फल यह हुआ कि स्वर्ग में पांव रखने को भी जगह नहीं बची। देवदूतों से व्यवस्था नहीं संभलने लगी। अतः एक दिन धर्मराज ने प्रार्थना की—भगवन ! यदि स्वर्ग में पुण्य कर्मियों का यह आगमन इसी प्रकार बढ़ता गया तो आप और हम कहां रहेंगे ?

समस्या विकट थी। विचार निमशार्थ त्रिदेवों की पुनः सभा हुई और काफी समय तक सोच विचार के बाद देवताओं ने उसमें तमोगुणी गन्ध डाल दी।

प्याज एक अच्छे किस्म के आहार और सद्यः फलदायक

श्रौषधि—दोनों का कार्य समान रूप से करता है। प्रसिद्ध लेखक श्राप्टन सिन्क लेयर प्याज की प्रशंसा करते हुए लिखते हैं—

Onions are like April day
Good for the sad and good for the joy
An Excellent food and drug are they
He who Uses them Certifies either way

आहार और श्रौषधि गुण के अतिरिक्त प्याज में एक तीसरा विशिष्ट गुण है मानव को अनुपम सौन्दर्य प्रदान करने तथा उसके शरीर को संगठित बनाने का। संस्कृत साहित्य में एक प्राचीन विवरण है कि एक समय शकों के राजा का जीवन प्याज के ऊपर अवलम्बित था। शक जाति की स्त्रियों का अनुपम सौन्दर्य और सुन्दर शारीरिक गठन का निर्माण करने में प्याज मुख्य चीज थी। नित्यप्रति प्याज के सेवन से शक ललनाओं की गोरी मुलायम गालें चन्द्रमा की कान्ति को भी मात करती थीं।

शक्ति का स्रोत होना, प्याज का चौथा विशेष गुण है। प्राचीन-काल में केवल शक्ति प्राप्त करने के लिए प्याज का इतना उपयोग किया जाता था कि अन्य किसी भी वस्तु का नहीं। प्राचीन मिस्र वासी अपने मजदूरों को शक्ति प्रदान करने के लिए उन्हें प्याज खूब खिलाते थे। मिस्र के प्रसिद्ध पिरामिडों पर काम करने वाले मजदूरों के लिए उस समय प्याज खरीदने के लिए नौ टन (करीब ढाई सौ मन) सोना खर्च हुआ था। ऐसा यूनानी विद्वान हेरो डोटस ने लिखा है 'चियोप्स के पिरामिड के एक शिलालेख के अनुसार वह पिरामिड २० वर्षों में बना और उसमें ३ लाख ६० हजार आदमी काम करते रहे, जिनको स्वस्थ रखने के लिए १ करोड़ ८० लाख रुपये के लगभग का प्याज, गाजर और लहसुन खरीदा गया था।

लहसुन की भांति ही प्याज का व्यवहार भी बहुत प्राचीन

काल से होता आ रहा है। मिस्र में प्याज जंगली बिटवों के रूप में पैदा हुआ करता था और लोग इसे उबालकर और कच्चा दोनों प्रकार से खाते थे। मरुस्थल में प्यास की रोकथाम करने और भोजन का स्वाद बढ़ाने में सहायक होने के कारण मिस्री लोग इसे बहुत महत्व दिया करते थे। हेरो डोटस ने भी लिखा है कि मिस्र में पिरामिडों का निर्माण करने वाले गुलामों को खिलाने के लिए प्याज पर बहुत बड़ी रकम खर्च की जाती थी।

प्राचीन काल से मिस्रियों की भांति ही यूनानियों ने भी प्याज़ को बहुत महत्व दिया था। यूनान में डोकोराइडिस नाम का एक सुप्रसिद्ध चिकित्सक हो गुजरा है। वह बवासीर में प्याज को तेल में पीसकर, नेत्र रोगों में शहद के साथ तथा पागल कुत्तों के काटने पर उसे सिरके के साथ प्रयोग कराता था। गैलेन बहरापन दूर करने के लिए प्याज के रस में तेल मिलाकर देता था और प्लीनी प्याज द्वारा आंख का उठना ठीक किया करता था।

नवीं, दसवीं और ग्यारहवीं शताब्दियों में जब अरब साम्राज्य बहुत उन्नत था तो एल इसरायली जैसे वहां के बड़े बड़े चिकित्सकों ने अरब में भी प्याज को बड़ी मान्यता दी थी। सुकरात तो प्याज़ को निश्चित रूप से शक्ति और साहस को बढ़ाने वाला मानता था।

फ्रांस के डाक्टर डाल्के ने सन १९१२ में प्याज पर एक थीसिस छपवाई थी। उस थीसिस में जलोदर रोग से पीड़ित कितने ही रोगियों को अधिक मात्रा में प्याज खिलाकर उन्हें चंगा कर देने की बात बड़े ज़ोरदार शब्दों में लिखी है।

प्याज को गरीबों की कस्तूरी का नाम दिया गया है। मतलब यह कि प्याज है तो एक नाचीज और अत्यन्त सस्ती चीज परन्तु गुण में मंहगी से मंहगी चीजें भी इसका मुकाबला नहीं कर सकतीं।

प्याज़, लहसुन की जाति का ही एक पौधा है। कुछ लोग इसका

आदि जन्म स्थान मध्य एशिया मानते हैं और कुछ लोग अफ्रीका। जहां से यह संसार के तमाम देशों में फैल गया। आजकल इसकी खेती समस्त संसार के समशीतोष्ण देशों में होती है। अमेरीका में जितने प्रकार की सब्जियों का उपयोग होता है उनमें प्याज़ का स्थान पांचवां है।

भारतीय संस्कृति के उपासक और हिन्दू धर्म ग्रन्थों में लिखे गये आचार विचारों के मानने वाले कुछ लोग प्याज़ को अग्राह्य और निम्न श्रेणी की खाद्य वस्तु मानते हैं। किन्तु आज के इस वैज्ञानिक युग में प्याज़ की महत्ता को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। अस्वीकार करने का कोई औचित्य दिखाई नहीं देता।

प्याज़ की जातियां और खेती

साधारण तौर पर प्याज़ की दो जातियां होती हैं सफेद और लाल। लाल प्याज़ की महक बहुत तेज़ होती है। सफेद की हल्की होती है। इन दोनों जाति के प्याज़ों के प्रभाव में थोड़ा अन्तर होता है। सफेद प्याज़ भारी, वीर्य उत्पन्न करने वाला, रक्त दोष, वमन, भूख की कमी को दूर करने वाला तथा स्वादिष्ट है। लाल प्याज़ तीक्षण, गर्म, पेट की कृमि, बवासीर तथा वायु विकार को दूर करने वाला है। पटने का प्याज़ विशेषतया सफेद छिल्के वाला होता है। ऐसा प्याज़ विशेष उपयोगी माना गया है। छोटे कद वाला और भी उपयोगी होता है। इसमें विटामिन सी की मात्रा अधिक होती है।

अपने देश में प्याज़ की कई किस्में हैं और यह छोटी बड़ी कई शक्लों में मिलता है। आकार के अलावा इनके रंग, गंध और स्वाद आदि में भी अन्तर होता है। अधिकांश जातियों के प्याज़ का आकार गोल तथा अण्डे के बराबर होता है और कभी कभी चपटे आकार का प्याज़ भी बाज़ार में देखा जाता है। प्याज़ का रंग साधारणतया

भूरा, सफेद, लाल और पीला होता है। कोई कोई प्याज़ बहुत छोटे आकार का भी होता है। परन्तु किसी किसी जाति के प्याज़ का आकार बहुत बड़ा होता है और वज़न आध सेर के लगभग या इससे भी अधिक होता है।

प्याज़ प्रायः बहुत दिनों तक अच्छा बना रहता है। यातायात में अधिक असावधानी से भी इसकी कोई विशेष क्षति नहीं होती। इसलिये व्यापार में यह एक प्रयोजनीय सामग्री मानी जाती है।

सभ्यता के आरम्भ से ही जिन सब्ज़ियों की खेती होती चली आ रही है उनमें प्याज भी एक है।

लूथर बरबैंक ने गंधहीन प्याज़ पैदा करने की विधि का अविष्कार किया था और उसका दावा था कि यह प्याज़ हर प्रकार से मामूली प्याज़ जैसा ही होता है, पर लोगों ने इस गंधहीन प्याज़ को पसंद नहीं किया। क्योंकि इसमें कोई स्वाद न था। जान हार्वे केलाग ने अपनी पुस्तक "दि न्यु डायाटेटिक्स The New Dietatics" में प्याज़ की ७० से अधिक किस्में लिखी हैं और बताया है कि प्याज़ में जो तेल का अंश है उसके आलाइल सल्फाईड मिला होता है तथा प्याज़ में एक तरह की शक्कर भी होती है।

स्पेन का प्याज़ अच्छा, स्वादिष्ट और काफी बड़ा होता है। प्याज़ के बीज की आयु एक साल है। बाहर से जो बीज आते हैं, वे अधिकांश पुराने ही आते हैं। इसलिये भारत में अब प्याज़ की खेती के लिये देशी बीज का ही प्रयोग होता है। अधिकतर लाल छिल्के वाला प्याज़ ही बोया जाता है। प्याज़ सीधे खेत में भी बोते हैं और नरसरी में बोकर पौधे भी तय्यार करते हैं।

प्याज़ अक्टूबर से दिसम्बर तक बोया जाता है। इसके प्रति एकड़ के हिसाब से बीज लेकर उसे राख में मिलाकर बोते हैं। नरसरी में बोकर पौधे तय्यार करने के लिये नरसरी की मिट्टी को खूब बारीक बनाना चाहिये और ६०० मन प्रति एकड़ के हिसाब से गोबर

की खाद डालनी चाहिये। थोड़ी राख भी डालना ज़रूरी है। क्यारियां ३ या ४ फीट चौड़ी और आवश्यकतानुसार लम्बी बनानी चाहिएं। बीज बोने की गहराई आध इंच से पौन इंच तक होनी चाहिये। क्यारियों को केले के पत्ते या खर पतवार से ढक देना चाहिये और हज़ारे से पानी देते रहना चाहिये। जैसे ही बीज जम आवें, केले के पत्ते या खर पतवार क्यारियों के ऊपर से हटा देना चाहिये। अन्यथा दीमक लग सकती है। ५ या ६ सप्ताहों में पौधे लगभग ३ इंच ऊंचे और लगाने लायक हो जाते हैं। तब उन्हें सिंचाई करने के बाद नरसरी से निकाल लें ताकि जड़ें टूटने न पावें। प्याज़ की पैदावार हल्की खुली हुई भुरभुरी मिट्टी में अच्छी होती है। कतार से कतार की दूर १० इंच रखनी चाहिये। पौधे से पौधा ४ से ६ इंच तक दूर रहे। पौधे लगाने से पहले उसके ऊपर का लगभग एक तिहाई भाग छांट दे ताकि पौधा सीधा रह सके।

प्याज़ के खेत में प्रति एकड़ २०० मन गोबर की खाद, एक गाड़ी मैले की खाद और एक गाड़ी राख देनी चाहिए। कम से कम १५ दिन में एक बार सिंचाई ज़रूर करनी चाहिये। सिंचाई के बाद निराई करने और पपड़ी तोड़ देने से पैदावार काफी बढ़ जाती है।

प्याज़ की खोदाई मार्च से आरम्भ होकर मई तक होती है। यदि प्याज़ में फूल आने लगें तो उन्हें तोड़ देना चाहिये, अन्यथा न तो उसका बीज बोने लायक ही रहेगा और न प्याज़ की अच्छी पदावार ही होगी।

प्याज़ की पैदावार प्रति एकड़ २५० से ३०० मन तक होती है।

प्याज़ की गांठें उखाड़ते समय बड़ी बड़ी और स्वस्थ गांठों को छांटकर बीज के लिये रख लिया जाता है। जिन्हें अक्टूबर, नवम्बर में खाद दी हुई क्यारियों में एक या डेढ़ फुट के फासले पर लगाते हैं। जिनसे बीज लगभग ५ माह में तय्यार होते हैं।

रसायनिक विश्लेषण

प्याज़ एक ऐसा खाद्य पदार्थ है जिसमें उत्तम स्वास्थ्य के लिये लगभग सभी उपयोगी विटामिन तथा खनिज लवण आदि पौष्टिक तत्व एक साथ उपलब्ध होते हैं।

बड़े प्याज़ में—

पानी ८६.८ प्रतिशत, खनिज पदार्थ ०.४ प्रतिशत, प्रोटीन १.२ प्रतिशत, कार्बोहाइड्रेट ११.६ प्रतिशत, कैलसियम ०.१८ प्रतिशत, फास्फोरस ०.०५ प्रतिशत, लोहा ०.०७ मिलीग्राम प्रति १०० ग्राम, वसा ०.१ प्रतिशत, विटामिन बी, ४० आई० यु० प्रति १०० ग्राम, कैरोटीन ५१ आई० यु० प्रति १०० ग्राम, थियामिन १२० माइक्रोग्राम, नियासिन ०.४ से ०.६ प्रतिशत, रिबोफ्लेविन १० माइक्रोग्राम तथा विटामिन सी ११ मिलीग्राम प्रति १०० ग्राम होता है।

छोटे प्याज़ में—

पानी ८४.३ प्रतिशत, खनिज पदार्थ ०.६ प्रतिशत, प्रोटीन १.८ प्रतिशत, वसा ०.१ प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट १३.२ प्रतिशत, कैलशियम ०.०४ प्रतिशत, फास्फोरस ०.०६ प्रतिशत, लोहा १.२ मिलीग्राम प्रति १०० ग्राम, विटामिन 'ए' २५ आई० यु० प्रति १०० ग्राम, विटामिन 'बी', ५० आई० यु० प्रति १०० ग्राम, विटामिन 'सी' ११ मिलीग्राम प्रति १०० ग्राम और कैरोटीन, थियामिन, नियासिन तथा रिबोफ्लेविन लगभग बड़े प्याज़ में पाये जाने वाले इन तत्वों के बराबर ही होते हैं।

प्याज़ में विटामिन 'ए' 'बी', और 'सी' के अतिरिक्त 'डी' और 'ई' विटामिन्स भी पाये जाते हैं। सोडियम, गंधक और फौलाद भी पर्याप्त मात्रा में होता है।

एक आउन्स प्याज़ से हमें १७ कैलोरीज़ गर्मी मिलती है।

प्याज़ को अधिक देर तक आग पर रखने से उसमें स्थित

विटामिन्स नष्ट हो जाते हैं। इसलिये प्याज से पूरा पूरा लाभ उठाने के लिये उसे कच्चा ही खाना चाहिये या फिर भाप के जरिये नर्म करके। साधारण तापक्रम में भी यदि प्याज को दीर्घ समय तक रख दिया जाय तो उसका विटामिन 'सी' सैकड़ा ४७ से ८० भाग तक घट सकता है। सफेद और समान रूप से गोल प्याज उत्तम होता है।

प्याज का डांठ भी एक पौष्टिक खाद्य पदार्थ है। जिसे फेंकना नहीं चाहिये। इसमें विटामिन 'ए', थियामिन और विटामिन 'सी' रहते हैं और इससे भोजन स्वादिष्ट बनता है। प्याज की कोमल पत्तियों का मजेदार साग बनता है।

प्याज को सुखाकर और कूट कर उसका चूर्ण बनाया जाता है जिसको 'सूप' और 'स्टू' में डालकर उन्हें खुशबूदार बनाते हैं।

प्याज में एक प्रकार का उड़नशील तेल जो सफेद और कड़ी गंध वाला होता है, रवे के रूप में परिणत न होने वाली शर्करा, गोंद जैसा एक द्रव, फास्फोरिक एसिड, एसेटिक एसिड, कैलशियम नाइट्रेट, अल्ब्युमिन तथा कुछ रेशेदार पदार्थ भी होते हैं।

यह स्मरण रखना चाहिये कि बड़े प्याज से छोटे प्याज में सैकड़ा ३२ से १४१ तक मिलीग्राम 'सी' विटामिन अधिक रहता है।

प्याज का औषधि गुण उसके उड़नशील और तीखे गंध युक्त तेल में निहित होता है जो उसके रस में ओत प्रोत रहता है। इस तेल का गुण स्फूर्तिदायक, कफ निस्सारक तथा पेशाब लाने वाला होता है। लंदन की प्रसिद्ध डाक्टरी पत्रिका Lancet लैनसेट में मिनशिन ने लिखा है कि प्याज का रस शरीर पर आक्रमण करने वाले जीवाणुओं को नष्ट कर देता है। इसलिये जो प्याज जितना ही अधिक गन्ध युक्त हो उसे उतना ही लाभकारी समझना चाहिये। बड़े प्याज की अपेक्षा छोटे प्याज में गन्ध अधिक होती है। पकाने तथा भूनने से यह गन्ध निकल जाती है। सफेद प्याज में भी लाल प्याज

की अपेक्षा यह गन्ध कम होती और परिपक्व प्याज़ में कोमल प्याज़ों की अपेक्षा अधिक होती है।

प्याज़ को गर्म राख या बालू से ढककर पकाने से उसकी गन्ध समाप्त हो जाती है। क्योंकि ऐसा करने से उसमें स्थित तेल भाप बनकर उड़ जाता है।

कुछ लोग प्याज़ को उसकी इसी गन्ध के कारण ही बुरा समझते हैं।

प्याज़ के स्वास्थ्य वर्द्धक गुण

ग्रीष्म ऋतु के विषय में आयुर्वेदाचार्यों का कथन है—

तीक्ष्णांशाति तीक्ष्णांश ग्रीष्मे संक्षिपतीवयत्।
प्रत्यह क्षीयते श्लेष्मा तेन वायुश्च वर्धते ॥

अर्थात ग्रीष्म ऋतु में सूर्य की किरणें अत्यन्त तीक्ष्ण होती हैं। अतः वे प्राणी मात्र के स्नेह को नष्ट कर उसके शरीर स्थित श्लेष्मा को नष्ट कर देती हैं जिससे उसकी शारीरिक शक्ति घट जाती और वायु की वृद्धि हो जाती है। ग्रीष्म ऋतु में ही जब धरती गरम तवे के समान तप जाती है और जिसको स्पर्शकर वायु भी गरम हो जाती है तब जो व्याकुलता होती है उसका अनुभव सबको हुआ ही होगा। इसी ऋतु में लू चलती है जिससे कितने ही प्राणी मर जाते हैं। पर इन सब ग्रीष्म कालीन उपद्रवों के उन्मूलक अथवा काल प्याज़ का विधिवत सेवन करना जो जानते हैं वे इन उपद्रवों से बचे रहते हैं। प्याज़ की उत्पति भी ठीक ग्रीष्म ऋतु में ही होती है जब उपर्युक्त ग्रीष्म कालीन उपद्रव होते हैं। इसलिये यह खाद्य वस्तु ग्रीष्म ऋतु के लिये भगवान का वरदान ही सिद्ध होती है, जिसका मर्यादित मात्रा में सेवन ऋतु सम्बन्धी लगभग सभी विकारों को नाश कर देना है।

श्लेष्मा की क्षीणता और वायु की रूक्षता से उत्पन्न होने वाले

रोगों से बचाव के लिये ऋषियों ने प्याज़ के विविध अनुभव प्रयोग जन हितार्थ किये हैं जिनसे गर्मी के मौसम में होने वाले रोगों से बड़ी सरलता से बचा जा सकता है।

हमारे देश में प्याज़ का प्रयोग मसाला और तरकारी के रूप में विशेष रूप से होता है। इस तरह अपने भोजन में हम नित्यप्रति प्याज़ का समावेश करके कितने ही रोगों से बचे रहते हैं और अपने स्वास्थ्य को सुदृढ़ बनाते हैं।

कच्चा प्याज़ खाना अधिक लाभकारी होता है। कारण भूनने, तलने से प्याज़ अपना नैसर्गिक गुण खो देता है। प्याज़ को मसालों के साथ पीसकर और भूनकर हम सब्ज़ियों में स्वाद पैदा करने के लिए मिलाते हैं, पर इस प्रकार से प्याज़ का सेवन प्याज़ के स्वास्थ्य-वर्द्धक गुणों से हमें वंचित कर देता है। प्याज़ की सब्ज़ी बनाकर या इसे दूसरी सब्ज़ियों के साथ पकाकर खाने से प्याज़ का अधूरा ही गुण हमें प्राप्त होता है। कच्ची साग सब्ज़ियों जैसे मूली, टमाटर, पालक आदि के साथ प्याज़ का सलाद बनाकर खाना प्याज़ के सेवन करने का एक उत्कृष्ट तरीका है।

प्याज़ से अधिकाधिक लाभ उठाने के सम्बन्ध में एक बात यह भी याद रखनी चाहिए कि जब प्याज़ खाना हो या उसकी तरकारी आदि बनानी हो तभी उसे काटना चाहिए। प्याज़ को काटकर कुछ देर के लिए रख छोड़ना उसके गुणों को नष्ट कर देना है। प्याज़ को काट-कर उसे तुरन्त प्रयोग कर लेना चाहिए तभी ही उसके लाभों को उठाया जा सकता है। दूसरे देर से कटे हुए प्याज़ में विकार भी पैदा हो जाते हैं। कारण, प्याज़ की गन्ध में वातावरण से कीटाणुओं को अपनी तरफ खीच लेने की विलक्षण शक्ति होती है। यही कारण है कि सलाद में सम्मिलित करने पर भी प्याज़ के टुकड़ों को अधिक देर तक खुला न रखना चाहिए। अर्थात् जब सलाद का प्रयोग करना हो तो उसके थोड़ी ही देर पहले प्याज़ को काटकर उसमें मिलाना

चाहिए और जहां तक हो उस मिश्रण को जल्दी ही खा लेना चाहिए। जो प्याज़ आधा घन्टा से अधिक का कटा हो उसको कदापि प्रयोग न करना चाहिए, अपितु दूषित और बेकार समझकर फेंक देना चाहिए।

कुछ दिन हुए डाक्टर एस० एस० नेहरू ने एक स्थान पर खाद्य तत्व पर भाषण देते हुए प्याज़ के एक विशेष गुण की ओर जनता का ध्यान आकर्षित किया था। उन्होंने बताया—'विटामिनों का आजकल काफी प्रचार हो रहा है सो ठीक है, लेकिन कुछ खाद्य वस्तुओं में शारीरिक स्वास्थ्य और स्फूर्ति संवर्द्धन के लिए एक नवीन तत्व की उपस्थिति का पता अभी हाल में वैज्ञानिकों ने लगाया है जो प्रसिद्ध विटामिनों से यदि अधिक नहीं तो कम भी गुणकारी नहीं है। वह तत्व अल्ट्रा वायलेट किरणों (Ultra Violet Rays) की भांति एक प्रकार की किरणें हैं जो कुछ प्रकार की जड़दार वनस्पतियों से निकलती रहती हैं। उन वनस्पतियों में प्याज मुख्य है।'

विद्युत-रेडियो-जीव विज्ञान के प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेस के जो सन् १९३ ' ई० में वेनिस नगर में हुई थी, कार्यक्रम के पृष्ठ ७९ पर प्याज़ के मूल में स्थित विलक्षण किरणों के सम्बन्ध में निम्नलिखित बातों का उल्लेख है :—

एम' किरणें प्याज़ में सूक्ष्म रूप में रहती हैं और इससे निकलती रहती हैं। ये किरणें एक से दो इंच तक की परिधि में और प्याज़ को खोद लेने के बाद केवल २४ घण्टे तक ही क्रियाशील रहती हैं। क्योंकि ये 'एम' किरणें अल्ट्रा वायलेट किरणों की प्रकार की होती हैं, पर बड़ी मधुर प्रकृति वाली होती हैं। अतः अल्ट्रा वायलेट किरण सरीखी इन मधुर किरणों का प्रभाव रोगी शरीर पर लाभकारी पड़ता है।

खाद्य गुण की दृष्टि से प्याज़ लहसुन से बढ़ चढ़कर है। प्याज़, शरीर को उत्तम खाद्य गुण प्रदान करता है, शरीर का पोषण करता और उसे शक्तिशाली बनाता है। यह वीर्य की वृद्धि करता और काम

शक्ति को बढ़ाता है। दमा और खांसी में गाढ़ी बलगम को पतला करके निकालता है। यह कीटाणुनाशक होता है और कितने ही संक्रामक रोगों से यह हमारी रक्षा करता है। इसलिए जब पास पड़ोस में हैज़ा या ताऊन फैला होता है तो लोग रोज़ प्याज़ में सिरका मिलाकर भोजन के साथ खाते हैं और हैज़े में प्याज़ के पानी को चूने के पानी में मिलाकर पिलाते हैं।

'दि न्यु फिज़िकल कल्चर' में फ्रैंक एलिस वे-वाउट ने लिखा है कि रूस में प्याज़ की उपयोगिता के सम्बन्ध में जांच हुई उससे ज्ञात होता है कि प्याज़ अद्‌भुत रूप से कीटाणुनाशक है। वहां के वैज्ञानिकों का कहना है कि यदि लहसुन व प्याज़ को ३ से ८ मिनट तक चबाया जाय तो मुंह में यदि बैक्टीरिया या अन्य कीटाणु होंगे तो वे मर जायेंगे।

प्याज़ पाचक, पौष्टिक, शीघ्र पतन को दूर करने वाला, ज्वर-नाशक, सर्दी और खांसी में लाभकारी, पेशाब खुल कर लाने वाला, स्वादिष्ट, रक्ताल्पता तथा जलोदर आदि कितनी ही कड़ी बीमारियों को दूर करने वाला है।

प्याज़ को उचित मात्रा में प्रतिदिन सेवन करते रहने से खाया हुआ भोजन शीघ्र पच जाता है। भूख खूब खुलकर लगती है। इसके खाते रहने से विभिन्न स्थानों तथा विदेशों का पानी कष्ट नहीं देता, अर्थात् विदेशों का खान पान स्वास्थ्य के प्रतिकूल नहीं पड़ने पाता।

एक डाक्टर का कहना है कि प्याज़ के अधिक सेवन से अनिद्रा रोग, नींद में बुरे स्वप्न आना तथा शरीर में खून की कमी का रोग आदि शीघ्र दूर हो जाते हैं। प्याज़ दस्तावर, उत्तेजक, कृमिनाशक तथा रक्त शोधक आदि १०१ स्वास्थ्य वर्द्धक गुणों से भरपूर होता है तथा इसमें ५० कैलोरी तक गर्मी पहुंचाने की असाधारण शक्ति है।

प्याज़ में टूटे हुए स्थान को जोड़ने की विलक्षण शक्ति है। यह कण्ठ को साफ करता है। आंखों को लाभदातक है। स्मरण शक्ति

को बढ़ाता है, बीमारी तथा बुढ़ापे को दूर रखता है; अर्थात् रसायन है। इससे बुद्धि भी तीव्र होती है।

प्याज़ का टुकड़ा घर में रखने से वहां सांप आदि विषैले जीवों का प्रवेश नहीं हो पाता। विषैले कीड़ों के काटने या डंक मारने पर प्याज का रस मल देने से उनका विष दूर हो जाता है। कमीज़ अथवा कोट की जेब में प्याज़ रखकर घर से बाहर निकलने पर सख्त गर्मी के दिनों में लू का डर नहीं रहता।

आयुर्वेद के आचार्यों ने प्याज़ को वातनाशक, क्वचित उष्णवीर्य, स्वल्प पित्तकारक, बल, वीर्य, अग्निवर्द्धक, स्निग्ध, धातुओं को स्थिर करने वाला, कफकारक, पुष्टिकर, मधुर, गुरु, रक्त पित्त नाशक और पिच्छिल कहा है।

प्याज़ स्वास्थ्य वर्द्धक और रोगनाशक के साथ साथ सौन्दर्यवर्द्धक भी होता है। यह त्वचा को शुद्ध करता, बदन को चिकना करता तथा गोरा और कांतिमय बनाता है।

प्याज चिकित्सा

भारत की मातायें अपने छोटे बच्चों को प्रायः एक पहेली बुझाया करती हैं जिसका उत्तर 'प्याज़' है। वह पहेली यह है :—

मीठा, कड़वा स्वाद है, रंग गुलाब रसाल।
विविध रोग का काल वह, बूझ पहेली लाल॥

इस पहेली द्वारा सम्यक रूप से इस तथ्य पर प्रकाश पड़ता है कि प्याज़ विविध रोगों की दवा ही नहीं अपितु जड़ से दूर करने वाला और उनका काल है।

प्राचीन काल में मिस्री पुरोहितों ने (जो झाड़ फूंक से रोगों का उपचार किया करते थे) यह पता लगाया था कि प्याज़ में कुछ रोगनाशक तत्व रहते हैं, इसलिये वे झाड़ फूंक के साथ साथ जो शूल, वात आदि के लिये पुल्टिस अपने रोगियों को देते थे उसमें प्याज़ भी

मिलाया करते थे। वे प्याज़ को चर्बी के साथ पीसकर क्षयकारक रोगों में देते थे, कान में दर्द होने पर इसका रस कानों में डालते थे। रंग का निखार करने की इच्छुक स्त्रियों को इसे शराब में उबालकर देते थे और इन क्वाथों के लिए काफी धन प्राप्त करते थे।

एक बार जब लंदन में प्लेग की बीमारी बड़े ज़ोरों से फैली हुई थी तो यह वहां एक दिलचस्प बात है कि तब केवल प्याज लहसुन की दुकानों में ही इस बीमारी को प्रवेश नहीं मिला। इससे पता चलता है कि प्याज में कीटाणुओं को नष्ट करने की जबर्दस्त शक्ति होती है। इस बात की तसदीक करने के लिए जब इटली के चिकित्सक श्री ई० क्यूबोनी तथा श्री सी० मोरिओत्डी ने प्याज के रस का इन्जेक्शन कई ऐसे खरगोशों को लगाये जिनके बदन में पहले टी० बी० के कीटाणुओं का प्रवेश कराया जा चुका था तब यह देखा गया कि इन पशुओं के शरीर के भीतर टी० बी० के कीटाणुओं की वृद्धि प्याज के रस ने रोक दी।

फ्रांस के डाक्टर डाल्चेने ने सन १९१२ ई० में प्याज़ पर एक लेख लिखा था। उस लेख में शोथ के कई रोगियों की चिकित्सा प्रणाली का विवरण भी उन्होंने लिखा था जो पर्याप्त मात्रा में प्याज का सेवन कर पूर्णतः निरोग हुए थे अथवा जिन्हें आशातीत लाभ हुआ था। अतः इन प्रयोगों से सिद्ध होता है कि मूत्राशय के ठीक न रहने के कारण जिन्हें शोथ की बीमारी हो उन्हें प्याज आश्चर्यजनक रूप से लाभ पहुंचाता है।

इलाहाबाद के सर्जन मेजर राव ने एक बार स्वीकार किया था कि मूर्च्छा तथा बेहोशी के दौरे में प्याज का रस सूंघने मात्र से लभ हो जाता है।

सिर और नाड़ी संस्थान के रोग

सिर के बालों का झड़ना—प्याज के दो टुकड़े करके उन टुकड़ों को सिर पर रगड़ने से कुछ ही दिनों में गंजे सिर पर बाल उग आते हैं तथा बालों का झड़ना रुक जाया है।

अनिद्रा रोग—यदि किसी को नींद न आती हो या वह गहरी नींद के लिए तरसता हो तो उसे चाहिए कि वह अपने हर भोजन के साथ प्याज जरूर खाये। प्याज़ को चाहे कच्चा खाये या भूनकर पकाकर। यह एक स्वास्थ्य विशेषज्ञ का नुस्खा है। इस नुस्खे के प्रयोग से बुरे सपने आने भी बन्द हो जाते हैं। बच्चों की अनिद्रा में या जो बच्चे अधिक रोते हैं, चिड़चिड़े होते हैं, उन्हें प्याज़ के बीजों की चाय बनाकर पिलायें, ठीक हो जायेंगे।

केवल प्याज़ की गन्ध को सूंघते रहने से भी अनिद्रा रोग में लाभ होता है। रात को सोने से पहले एक बड़े प्याज़ का रस पी लेने से भी गहरी नींद आ जाती है। गंध वाले प्याज़ को रोगी की गर्दन के पीछे बांधने से भी वही लाभ होता है।

आधे सिर का दर्द (आधा सीसी) व अन्य प्रकार के सिर दर्द—आधा सीसी का दर्द हो अथवा किसी प्रकार का सिर दर्द हो, प्याज़ को कुचल पीस और उसकी पुल्टिस बनाकर माथे पर बांधने से वह अवश्य दूर हो जाता है। केवल प्याज को काटकर उसकी गन्ध सूंघने से भी सिर दर्द में लाभ होता है। गर्मी के कारण अचानक पैदा होने वाले सिर दर्द में माथे पर प्याज़ की ताजी लुगदी की पुल्टिस बांधने के साथ साथ प्याज़ के रस में थोड़ी सी शक्कर मिलाकर चाटना भी चाहिये। प्याज को बारीक पीसकर पैर के तलुओं पर लेप करने से सब प्रकार का सिर दर्द दूर हो जाता है।

मिर्गी रोग—इस रोग में प्याज का तीन औंस स्वरस रोगी

को रोज़ पिलाना चाहिए और रोग का दौरा होने पर बेहोशी की हालत में उसी रस की नाक में नास देनी चाहिए।

गठिया–राई के तेल में थोड़ा प्याज़ का रस मिलाकर मालिश करने से गठिया में लाभ होता है।

हिस्टेरिया और बेहोशी—हिस्टेरिया और बेहोशी के दौरा में प्याज़ का रस सुंघाना चाहिए अथवा उसकी एक बूंद नाक में डाल देनी चाहिये। ऐसा करने से रोगी को होश आ जायेगा।

वातशूल—प्याज़ के रस से या लुगदी की पोटली बनाकर गर्म तवे पर थोड़ा घी डालकर सुहाता सुहाता सेंकें या प्याज़ का रस ५ तोला, लहसुन का रस ५ तोला, पुराना गुड़ ५ तोला। तीनों को चीनी के पात्र में एक सा करें। ५–७ दिन बाद भोजन कर लेने पर १ तोले की मात्रा से सेवन करें।

कान, आंख, मुँह, दांत और गला के रोग

कान का दर्द—प्याज़ के बीच की कली का स्वरस निकालकर उसे थोड़ा गर्म करके जिस कान में दर्द हो उस कान में वह रस दो तीन बूंद टपकायें। एक दो दिन ऐसा करते से कान का दर्द अवश्य दूर हो जाता है। इस रस में रूई तर करके कान के छिद्र में फाये की भांति रखने से भी वही लाभ होता है। प्याज़ की कली के साथ मूली के बीज पीसकर और उनका रस निकालकर कान में गरम गरम डालने से कान दर्द शीघ्र दूर हो जाता है। एक पूरे प्याज़ को गरम राख में पका लें। फिर छीलकर बीच से काट लें। कान के दर्द में इनसे सेंक भी करना चाहिये। गरम राख में भुने हुए प्याज़ को कुचल और निचोड़कर निकाला तीन बूंद गरम रस भी पीड़ा की शान्ति के लिए कान में डालते हैं। इससे तुरन्त लाभ हो जाता है।

कान से पीप बहना—जिस कान से पीप बहती हो उस कान

को रूई की फुरेरी से साफ कर लेने के बाद प्याज़ का ३–४ बूंद ताज़ा स्वरस उसमें टपका देना चाहिए। कान से पीप बहने का रोग यदि बहुत पुराना हो गया हो तो रोग को जड़ से जाने में थोड़ी देर लगती है। अतः रोग से मुकाबला करने की शक्ति को बढ़ाने के लिए रोगी को पुष्टिकर भोजन देना चाहिए जिसमें कच्चे प्याज़ भी रहें।

कान में आवाज़ें व भिनभिनाहट और बहरापन— कान में सायं-सायं की आवाज़ें होने या भिनभिनाहट होने पर प्याज़ के स्वरस से तर फाया कान में रखना चाहिये। ऐसा करने से कान के ये दोष दूर हो जाते हैं। प्याज़ का रस कान में डालते रहने से बहरापन भी दूर हो जाता है।

दांत और मसूढ़ों की पीड़ा—इन तकलीफों में प्याज़ का स्वरस पीड़ा के स्थान पर लगाना चाहिये। दांत के दर्द में प्याज़ के एक टुकड़े को दांतों के बीच दबा रखना भी लाभकारी है। प्याज़ के रस से मसूढ़ों से पीप तथा रक्त आने को आराम आ जाता है। प्याज़ के बीजों को लेप करने, गरारे कराने अथवा उनकी धूनी देने से भयंकर से भयंकर दांत दर्द को आराम आ जाता है।

मोतियाबिन्द—कहते हैं मोतियाबिन्द बिना आपरेशन ठीक नहीं होता। परन्तु अनुभव बताता है कि मामूली प्याज़ के रस से मोतियाबिन्द भी ठीक हो जाता है। कहा जाता है, एक मनुष्य की आंखों की दृष्टि (रोशनी) बिलकुल जाती रही थी। उसने अपने आंखों की रोशनी को पुनः वापस लाने के लिये बहुत उपाय किये, बहुत औषधियां प्रयोग कीं परन्तु रोशनी वापस न हुई। एक दिन दैवयोग से उसे एक ढेर प्याज़ों को चाकू से काटने का काम सुपुर्द किया गया। उसने प्याज़ों का काटना आरम्भ कर दिया। मगर थोड़ी ही देर बाद उसकी आंखों में प्याज़ों की झार जो व्यापी तो दोनों आंखों से अनवरत पानी बहना आरम्भ हो गया। अभी कुछ प्याज़

काटने को बाकी ही थे कि वह यह अनुभव करके आश्चर्य चकित रह गया कि उसके मोतियाबिन्द रोग जाता रहा था और उसे सब कुछ दिखाई दे रहा है। इस सच्ची घटना से इस तथ्य पर पूरा पूरा प्रकाश पड़ता है कि प्याज का रस नेत्र के अन्य रोगों की भांति, मोतियबिन्द जैसे दु:साध्य रोग को भी ठीक कर सकता है।

मोतियाबिन्द आरम्भ होते ही या मोतियाबिन्द का पानी उतरने के थोड़े ही दिनों बाद से सफेद प्याज का ताजा स्वरस २—३ बूंद प्रतिदिन नियमित रूप से आंखों में डालते रहना चाहिये। ऐसा करने से मोतियाबिन्द का बढ़ना रुक जायेगा और जो बन चुका है वह धीरे धीरे कट जाता है। आंखों में प्रतिदिन डालते रहने के साथ इस रस को आंखों के बाहर, माथे और कनपटियों पर मल दिया करें। काफी समय तक इसके प्रयोग से आंख की स्नायु Optic Nerve में शक्ति पैदा हो जाती है, और दृष्टि तेज हो जाती है।

२½ तोले प्याज के ताजे रस में २½ तोला असली शहद मिलाकर शीशी में रख लें और जस्त की सलाई से दोनों समय नेत्रों में अंजन की भांति आंखों में डालते रहें। यह योग मोतियाबिन्द की प्रारम्भिक अवस्था में विशेषकर लाभप्रद है। इससे अन्य सभी प्रकार की नेत्र पीड़ा में भी लाभ होता है, विशेषकर दृष्टिमन्दता में।

अंजनहारी—आंखों के पपोटों पर फुंसी निकलने पर प्याज का रस लगाने से अंजनहारी की फुन्सी ठीक हो जाती है। इस पर प्याज का टुकड़ा बांध देने से भी लाभ हो जाता है।

रात को दिखाई न देना (रतौंधी)—प्याज के ताजे रस में ज़रा सा नमक घोलकर आंखों में १—२ बूंद रोज़ टपकाने से रतौंधी को आराम आ जाता है। केवल प्याज का स्वरस आंखों में डालने से भी रतौंधी ठीक हो जाती है। साथ में यदि आठ आना भर

प्याज़ के रस में चवन्नी भर शुद्ध घी मिलाकर रोज़ खायें तो भी दिमाग में शक्ति बढ़ जाने के कारण रात को न दिखाई देने का रोग दूर हो जाता है। यह रोग ग्रीष्म ऋतु में उन किसानों और मज़दूरों को प्रायः हो जाता है जो नंगे सिर नंगे पैर धूप में काम करने के लिये बाध्य होते हैं।

नेत्रों की लाली, जलन, खुजली आदि—रात को सोते समय प्याज़ का ताज़ा रस नेत्रों में लगाने से नेत्रों की लाली, जलन, ढलका, खुजली कड़क, रेत, कंकर प्रतीत होना, आंसू भरा रहना लू की जलन तथा दाह आदि सब रोग ठीक हो जाते हैं। १ माशा प्याज़ का रस १ माशा शहद, २ माशा गुलाब जल। तीनों को खूब मिलाकर शीशी में रख लें। सुबह शाम २-२ बूंद आंखों में टपकायें, हर प्रकार का आंख का रोग दूर हो।

गले की खराबी—गले की खराबी में प्याज़ को सिरके के साथ पीसकर लेप लगाना चाहिये। साथ ही भूना या उबला प्याज़ खाना चाहिये। भूने हुये प्याज़ में २ रत्ती सुहागा मिलाकर उसका भुर्ता बनाकर खाने से बैठा गला खुल जाता है। गले के फोड़े पर प्याज़ को घोंट कर लेप करने से वह ठीक हो जाता है।

आवाज़ बन्द—अगर किसी व्यक्ति की आवाज अकस्मात बन्द हो जाय तो उसे प्याज़ का ताज़ा रस दिन में दो तीन बार पिलाने से वह पुनः बोलने लगेगा।

श्वास यन्त्र (नाक और फेफड़ों) के रोग

श्वास यन्त्र के रोग मुख्यतः श्वास संस्थान में कफ अकड़ जाने के कारण होते हैं। प्याज़ में यह एक विशेष गुण है कि वह कफ को ढीला करके निकाल देने में अद्वितीय है। इसीलिए प्याज़ के नियमित और विधिपूर्वक सेवन से क्षय, रक्त कास तथा श्वास यन्त्र के अन्यान्य सभी रोग मन्त्रवत दूर हो जाते हैं।

प्याज़ का दूसरा अद्भुत गुण है उसकी गन्ध जिसके द्वारा रोगोत्पादक जीवाणुओं का नाश हो जाता है। अतः क्षय रोग की रोकथाम करने और उसे दूर करने में प्याज़ का सेवन सहायक होता है। रूसी वैज्ञानिकों ने हज़ारों प्रयोगों के बाद इसकी पुष्टि भी की है। वे वैज्ञानिक प्याज़ को पीसकर छोटी छोटी नलियों में भर कर रखते और नली का एक मुंह पीप स्राव करने वाले घाव से लगाते थे। प्याज़ की लुगदी के साथ घाव का सम्पर्क नहीं होता था। यह उपचार दो से दस मिनट तक दो तीन बार करने पर घाव अच्छा हो जाता था। इससे वे इस परिणाम पर पहुंचे कि प्याज़ में जीवाणु नाशक तत्व अवश्य होता है।

खांसी, जुकाम—प्याज़ का काढ़ा, क्वाथ या कच्चे प्याज़ का थोड़ा सा स्वरस रोज़ सुबह शाम सेवन करने से सब प्रकार की खांसी· जुकाम में लाभ होता है। प्याज़ के रस में शहद मिलाकर पीने से भी वही लाभ होता है। इससे ज्वर, जुकाम और पुरानी ब्रोंकाईटिस अर्थात् फेफड़ों की सर्दी से उत्पन्न हुई खांसी आदि सबमें फायदा होता है।

नकसीर—प्याज़ के दो टुकड़े करके उन्हें गर्दन में बांधने से नकसीर रुक जाती है। केवल प्याज़ का रस पीने से भी इस रोग में लाभ होता है। प्याज़ का ताज़ा रस नाक के नथुनों में टपकाने और उसी की लुगदी माथे पर सुबह शाम बांधने से भी नकसीर बन्द हो जाती है।

राजयक्ष्मा—रोज़ दोनों समय प्याज़ का काढ़ा पीने अथवा कच्चे प्याज का थोड़ा सा रस चाटने से राजयक्ष्मा में लाभ होता है। कच्चा प्याज़ नमक के साथ खाने से भी वही लाभ होता है।

सांस की नली में सूजन से खांसी—सांस की नली में सूजन आ जाने की वजह से खांसी तथा गले की घरघराहट के लिए प्याज़ को भूनकर या उबालकर और उसका रस निकालकर पीना चाहिए।

पित्तजन्य श्वास में ४० दिन तक सूर्योदय से पूर्व २ तोला प्याज़ मधु में डुबोकर खाना चाहिए। श्वास, कास, हिक्का में ६ ग्राम प्याज़ को आधा लिटर जल में उबालें। चौथाई रह जाने पर पी लें।

रक्त संस्थान (हृदय, रक्त और त्वचा) के रोग

हृदयशूल—प्याज़ 'दर्द दिल' की दवा है। यह रहस्योद्घाटन उत्तर प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय की मासिक पत्रिका 'किसान भारती' के एक अंक में प्रकाशित एक समाचार में किया गया है। उक्त समाचार के अनुसार ब्रिटिश डाक्टरों ने हाल ही में एक महत्वपूर्ण खोज की है, जिससे पता चलता है कि प्याज का प्रयोग दिल की बीमारियो के इलाज में लाभदायक है। वह खून को गाढ़ा होने से रोकता है तथा इस तरह दिल के दौरों पर नियन्त्रण करता है। प्याज का उपयोग क्षय रोग के इलाज में भी लाभदायक साबित हुआ है। इटली के डाक्टरों ने क्षय के रोगियों को प्याज के रस के इन्जेक्शन लगाकर देखा कि इससे रोग की भीषणता कम हो गयी।

पीलिया व रक्तहीनता—रोज सुबह प्याज़ के रस में शहद मिलाकर २–३ चम्मच पीने से पीलिया व रक्तहीनता दोनों में लाभ होता है। सिरके में रखा एक प्याज़ रोज खाने अथवा भोजन के साथ कच्चा प्याज़ अधिक खाने से भी इन रोगों में लाभ होता है। १–१ तोला प्याज़ का रस सुबह शाम बच्चों को पिलाने से उनके शरीर का पीलापन दूर होता है।

रक्त शुद्धि के लिए—५ तोले प्याज़ के रस में एक तोला मिश्री और एक माशा भुना सफेद जीरा प्रातः काल पीने से अशुद्ध

रक्त शुद्ध हो जाता है और फलस्वरूप पामा, खाज, खुजली आदि दूर हो जाते हैं।

फोड़ा, फुन्सी, ज़ख्म–प्याज़ की गरम पुल्टिस रखने से कच्चा फोड़ा पक जाता है। प्याज़ व अलसी को एक साथ पीसकर और उसमें थोड़ा सा नींबू का रस डालकर उसकी पुल्टिस बनाकर फोड़े पर बांधने से भी फोड़ा पककर फूट जाता है। फोड़े को पकाने और शीघ्र फोड़ने के लिए एक प्याज़ का आधा टुकड़ा अधभुना करके बांधना चाहिये। प्याज़ को घी या तेल में तलकर फोड़े पर बांधने से भी फोड़ा फूट जाता है। प्याज़ को बछिया के मूत्र में पीसकर और उसे सरसों के तेल में तलकर उसकी पुल्टिस २–३ वार बांधने से उठती हुई बद्ध बैठ जाती है।

दाद, खुजली—शराब में प्याज़ को पकाकर लगाने से खुजली मिट जाती है। ऐसे चर्म रोग जिनमें खुजली अधिक होती है, खुजली के कारण नींद हराम कर देते हैं उनमें प्याज़ का रस व्यवहार करने से खुजलाहट मिट जाती हैं। बीजों को सिरका में पीसकर लगाने से दाद और छाजन साफ हो जाते हैं।

कोढ़—कोढ़ की जगह पर प्याज़ की पुल्टिस बांधने से लाभ होता है। प्याज़ का रस, शहद और नमक तीनों को खरल करके सफेद कोढ़ पर लगाने से वह मिट जाता है। बीजों को गोमूत्र में पीसकर लेप करने से श्वेत कुष्ट ठीक हो जाता है।

मस्सा व तिल—रोज़ कटे हुए ताजे प्याज़ से मसा या तिल को रगड़ने से वे धीरे धीरे लुप्त हो जाते हैं।

गिल्टी व शोथ–प्याज़ की बारीक पिसी हुई लुग्दी में थोड़ा सा खाने का नमक मिला बच्चे के पेशाब में पकाकर टिकिया बना लें और सुबह शाम गिल्टी पर बांधें तो गिल्टी बैठ जायेगी, या फूटकर बह जायेगी। भुने प्याज़ में हल्दी और घी मिलाकर गरम गरम बांधने से बद या गांठ फट जाती है।

इन्फ्लूऐन्ज़ा–उपवास कराते हुये रोगी को एक चम्मच ताज़े प्याज़ का रस शहद में मिलाकर दिन में ३ बार सेवन कराने से इन्फ्लू-ऐन्ज़ा ठीक हो जाता है। बच्चों को आधी मात्रा में दें। गर्भिणी को यह दवा सेवन न करायें।

ऊंचाई बढ़ाने के लिये–एक तोले ताज़े प्याज़ के रस में अठन्नी भर पुराना गुड़ मिलाकर प्रातः काल सेवन करें ३–४ मास लगातार सेवन करने से ऊंचाई में वृद्धि होगी। कब्ज़ पैदा करने वाली चीजों से परहेज़ रखें।

बालों की जुएं व लीख नष्ट हों—पहले बालों को त्रिफला के पानी से धोकर साफ करें। फिर एक तोला प्याज़ के रस में २½ तोला सरसों का तेल मिलाकर उसी से बालों की मालिश करें। ऐसा करने से कुछ ही दिनों में जुएं व लीख सब नष्ट हो जायेंगे।

दुर्गन्ध युक्त पसीना–जिस किसी को पसीना दुर्गंन्ध युक्त आये, वह भोजन के साथ नियमित रूप से कच्चे प्याज़ का सेवन करे। ऐसा करने से कुछ ही दिनों में उसके पसीने का यह दोष दूर हो जायेगा।

मुहासा–सिरके में उबाले हुये प्याज़ के सेवन से मुहासे दूर हो जाते हैं। प्याज़ को घृत में तलकर बांधना या केवल प्याज़ का रस लगाना भी लाभ करता है।

मलेरिया ज्वर–दो तीन काली मिर्चों के साथ प्याज़ खाने से मलेरिया ज्वर उतर जाता है।

बच्चों की बढ़ोत्तरो होने के लिये-बच्चों को रोज़ प्याज़ और गुड़ खाना चाहिये।

पेट के रोग

हैज़ा- (१) प्याज़ का एक से तीन तोला स्वरस एक एक घंटे

बाद रोगी को पिलाने से हैज़े में लाभ होता है।

(२) प्याज़ का ५ से १० बूंद स्वरस १०–१० मिनट के अन्तर से पिलाने से वही लाभ होता है। या

(३) दो प्याज़ पीसकर और कपड़ें से छानकर उनका रस निकालें। फिर उसमें उतनी ही देशी शराब मिलायें और १½ छटांक की खुराक से रोगी को दिन में ४ बार और रात में २ बार पिलायें। इसके प्रयोग से रोगी को नींद आयेगी और पेशाब आ जायेगा। इस तरह उसे धीरे धीरे आराम हो जायेगा। पानी की जगह रोगी को इसी दवा में पानी मिलाकर पिलाना चाहिए। वह पानी हाज़मा को ठीक करता है।

(४) जब तक कै होती रहे तब तक हर १० मिनट पर प्याज का स्वरस और पोदीना का रस बराबर बराबर मिलाकर १–१ छोटे चम्मच भर पिलाना चाहिये। जब कै बन्द हो जाय तो १–१ घन्टे या आधा आधा घन्टे के अन्तर से पिलाना चाहिए। जब कै एक दम बन्द हो जाय तो फिर ४–४ घन्टे बाद दें और रोगी जिस कमरे में हो उसके दरवाजे पर प्याज़ों की माला बनाकर लटका दें।

(५) रोगी को प्याज़ का थोड़ा सा रस, नींबू का रस तथा खांड का मिश्रण चटाते रहना चाहिए।

(६) प्याज का रस एक भाग, पुरानी पकी इमली का रस दो भाग, दोनों को मिलाकर दिन में कई बार पिलाना चाहिए।

(७) नींबू का रस और प्याज का रस समभाग मिलाकर पिलाना चाहिए।

(८) एक अदद कटा हुआ प्याज़ २½ तोले, काली मिर्चें ७ अदद, पोदीना हरा ४ माशे, सबको नीम के डंडे से भंग की भांति घोटें और आधा पाव पानी मिलाकर बगैर छने और १ माशा मिश्री मिलाकर रोगी को पिला दें। बच्चों को २–३ बार सेवन करायें। इस के प्रयोग से हैज़े से शीघ्र छुटकारा मिल जाता है।

दस्त, शूल और पेचिश—प्याज़ में चीरा देकर उसमें आधी रत्ती अफीम भरकर गरम राख में भून लें और रोगी को खिलायें। इससे जब आंतों की सफाई हो चुकी हो दस्तों या पेचिश में लाभ होता है।

शूल, वायुगोला या साधारण पेचिश में केवल प्याज़ के रस के सेवन से ही लाभ हो जाता है।

बच्चे के पेट में पीड़ा हो, उसे घबराहट हो, नींद न आती हो तो भूने प्याज़ का ३ माशा रस चटा देने से उसे शान्ति मिल जाती है। इसके साथ ज़रा सी शहद भी दे देना ठीक रहता है।

मौसमी पेचिश में प्याज़ का रायता बहुत लाभप्रद होता है। यदि रक्त अधिक जा रहा हो तो एक चम्मच प्याज़ के ताज़े रस में खसखस प्रमाण अफीम मिलाकर दिन में तीन बार सेवन करायें। आहार में सिर्फ साबूदाना दें। चाय, दूध, पान इत्यादि से परहेज़ करवायें। बच्चों को यह दवा अवस्थानुसार चौथाई या आधी मात्रा में दे सकते है।

प्याज़ को खूब महीन पीसकर साफ पानी से धोकर साफकर लें फिर उसे गाय के ताज़े दही के साथ खायें। इससे भी आंव और खून के दस्त आने बन्द हो जाते हैं। एक प्याज़ के बीच $\frac{1}{2}$ रत्ती अफीम रखकर, गरम राख में दबाकर भून लें, उसे खिलाने से भी आंव मिले खून के दस्त बन्द हो जाते हैं।

प्याज़ के रस में ज़रा सा नमक मिलाकर सेवन करने से पेट के दर्द को आराम हो जाता है।

प्याज़ को पीसकर नाभि पर लेप करने से दस्तों में लाभ होता है। प्याज़ के ६ माशा रस में $\frac{1}{2}$ रत्ती अफीम मिलाकर खिलाने से भी पतले दस्त बन्द हो जाते हैं।

स्कर्वी—भोजन के साथ रोज़ कच्चा प्याज़ खाने से स्कर्वी रोग

धीरे धीरे ठीक हो जाता है।

पथरी–प्याज़ का रस २ तोला रोज़ सुबह पीने से मसाने की पथरी टूट जाती है और गलकर बाहर बह जाती है।

खूनी व बादी बवासीर–प्याज़ के रस में घी और चीनी मिला कर खाने से बवासीर ठीक हो जाती है। प्याज़ को कतरकर और सुखाकर घी में तल लेना चाहिये। तत्पश्चात उसमें २ माशा धुले तिल और २ माशा शक्कर मिलाकर प्रतिदिन सेवन करे तो भी बवासीर ठीक हो जाती है।

प्याज़ को घी में पकाकर खाने से अथवा प्याज़ के ४० बूंद स्वरस में खांड मिलाकर प्रतिदिन सेवन करने से भी खूनी बवासीर में लाभ होता है। प्याज़ सफेद २½ तोला के साथ ५ तोला मिश्री बारीक पिसी और उसे आधा सेर पानी में मिलाकर पिला दें। खूनी बवासीर दो बार के पीने से खतम हो जायगी। परीक्षित है।

प्याज़ के रस को शहद के योग से पीना भी खूनी बवासीर में लाभकारी है।

दो प्याज़ अंगारे की मंद राख में भून लें। तत्पश्चात छिलका उतारकर पीस लें और लुगदी में ज़रा सा घी मिलाकर उसकी पोटली बना सुहाता सुहाता गुदा के ऊपर मस्सों पर रखकर बांध दें। इससे पीड़ा से तड़पता रोगी चैन से सो जाता है।

बढ़ी हुई तिल्ली–बढ़ी हुई तिल्ली के रोगियों को सिरके वाले प्याज़ भोजन के साथ खाने से लाभ होता है। सिरके वाले प्याज़ बनाने की विधि:—चुने हुये प्याज़ लेकर ऊपर का सूखा छिलका हटा दें। तत्पश्चात् उन्हें गरम नमकीन पानी में डाल दें। एक दो दिन बाद उन्हें निकालकर सुखा लें। फिर उन्हें चिकनी हांडी में डालकर उसमें जामन का सिरका इतना डालें कि प्याज़ ढक जाये। नमक, पिसी हुई काली मिर्च और मूली के कतले भी उसमें मिला लें। बस सिरके वाला प्याज़ तय्यार है।

सिरके का प्याज़ प्रतिदिन भोजन के साथ खाने से यकृत के भी सारे विकार दूर हो जाते हैं ।

अजीर्ण—प्याज़ के टुकड़ों पर नीबू का रस छिड़ककर खाने से अजीर्ण तो दूर हो ही जाता है, साथ ही जिन दिनों पड़ोस में हैज़ा फैला हो उन दिनों इससे अजीर्ण जन्य हैज़ा होने का भी भय नहीं रहता ।

सिरके के साथ प्याज़ खाने से भी अजीर्ण में लाभ होता है ।

कृमिरोग—प्याज़ का स्वरस पिलाने से बच्चों के पेट के कीड़े नष्ट हो जाते हैं और बदहज़मी का रोग भी अच्छा हो जाता है ।

हिचकी—प्याज़ का रस सूंघने और चना प्रमाण काले नमक की डली मुंह में रखकर चूसने से हिचकी आनी बन्द हो जाती है ।

गला जलना—प्याज़ के पतले पतले टुकड़े करके उन्हें दही और मिश्री के साथ खाने से गला जलना दूर होता है ।

भूख न लगने पर—भोजन के साथ प्याज़ अधिक खाने से भूख खुलकर लगने लगती है ।

कब्ज़—कब्ज़ तोड़ने के लिये प्याज़ का नियमित रूप से सेवन करना चाहिये ।

अरुचि, मतली और कै—कच्चे प्याज़ को नमक के साथ खाने से अरुचि, मतली और कै में लाभ होता है । प्याज़ को केवल सूंघने से कै होना बन्द हो जाता है ।

मूत्राशय के रोग—प्याज़ का काढ़ा पीने से कष्ट से आता पेशाब तथा रुके पेशाब दोनों में लाभ होता है । प्याज़ का रस और ५ तोला मिश्री एक साथ पिलाने से रुका मूत्र खुल जाता है । प्याज़ को कण्डों की गरम राख में पकाकर और चीरकर बच्चे के मूत्राशय पर गरम गरम बांधने से बच्चे का रुका पेशाब खुल जाता है । पानी जिसमें प्याज़ उबाला गया हो, पीने से मूत्र कृच्छ्र आराम हो जाता

है। ½ तोला प्याज ½ सेर पानी में उबालें। जब १ पाव रह जाये तो छानकर ठडा करके पिलाने से कड़क व जलन मिट जाती है।

जलोदर—चूंकि प्याज स्वेद (पसीसा) लाकर शरीर में स्थित विष को निकाल फेंकने में अद्वितीय होता है, इसलिये इसके नियमित सेवन से धीरे धीरे जलोदर का विष शरीर से बाहर हो जाता है और शरीर रोग मुक्त हो जाता है।

जननेन्द्रिय सम्बन्धी रोग

बल-वीर्य की वृद्धि के लिए—(१) यदि पुरुष में बल-वीर्य की कमी हो, कमजोरी हो तो ऐसी हालत में उसे प्याज के रस में शहद मिलाकर एक तोला रोज पीना चाहिए। ऐसा कुछ ही दिनों तक करने से नामर्दी दूर होकर काम शक्ति असाधारण रूप से बढ़ जाती है।

(२) प्याज का रस ८ माशा, अदरक का रस ६ माशा, शहद ४ माशा तथा घी २ माशा। इन सबको मिलाकर २१ दिन तक सेवन करने से नामर्दी दूर होकर मर्दानगी आ जाती है।

(३) प्याज का रस और शहद दोनों को बराबर बराबर लेकर मिलायें और कांच के बर्तन में रखकर धूप में सुखायें। जब रस सूख जाये और थोड़ी शहद रह जाये तो उसमें से १ तोला शहद रोज चाटने से जिस्म में काफी ताकत पैदा हो जाती है।

(४) प्याज का रस, शहद, शुद्ध देशी घी दो दो तोला और दो अण्डों की ज़र्दी। सबको एक प्याले में डालकर फेंटे। तत्पश्चात् आग पर पकाकर प्रातः समय खायें तो शरीर में काम शक्ति की अत्यधिक वृद्धि हो जायेगी। २॥ तोला प्याज का रस और ५ तोले शहद को अलग अलग पकायें। जब गाढ़ा हो जाये तो उतारकर ठन्डा होने पर एक में मिला दें और चाट जायें। एक सप्ताह ऐसा करने से चेहरा

लाल हो जायेगा। अत्यन्त वाजीकरण है।

(५) जाड़े के दिनों में आधे चम्मच प्याज के रस में एक चम्मच शहद मिलाकर चाटने से शरीर बलवान बनता है और नपुन्सकता दूर होती है।

बिगड़ा मासिक धर्म—कच्चे प्याज का नियमित सेवन स्त्रियों के बिगड़े मासिक धर्म को ठीक कर देता है। १० तोला प्याज काटकर और उसकी सब्जी बनाकर खिलाने से बन्द मासिक धर्म चालू हो जाता है। रात को सोते समय ५ तोला प्याज का रस गर्म करके पीने से भी बन्द मासिक धर्म खुल जाता है। ५ तोला प्याज काटकर ५ सेर पानी में पकायें। १॥ पाव शेष रहे तो ३ तोला गुड़ डालकर पीयें। कुछ ही दिनों में बन्द मासिक खुल जायेगा। इससे कष्टार्तव में भी लाभ होता है।

आकस्मिक दुर्घटनायें

विषैले कीड़े मकोड़ों के काटने पर–(१) प्याज को काटकर और उस पर थोड़ा सा भीगा हुआ चूना रखकर विषैले कीड़े मकोड़ों के काटने की जगह पर मल देने से दर्द कम हो जाता या जाता रहता है। बिच्छू के काटे पर भी इससे लाभ होता है। कान खजूरे के काटे पर प्याज और लहसुन को पीसकर लेप कर देना चाहिए

(२) प्याज का रस लगाने अथवा प्याज को पीसकर उसका लेप लगाने से भी विषैले कीड़ों का ज़हर दूर हो जाता है। प्याज का रस और नौशादर बराबर बराबर लेकर खरल कर लें और शीशी में भरकर रख छोड़ें। ततैया, बिच्छू के काटने पर दो चार बूंद लगा दें। अक्सीर है।

पागल कुत्ते के काटने पर–प्याज को कूटकर और शहद में मिला कर कुत्ते के काटे हुए स्थान पर लगाने से ज़हर उतर जाता है। इसके

लगाने के साथ साथ सफेद जीरा, स्याह जीरा और काली मिर्च बराबर २ पीसकर २ माशे चूर्ण भी खिलाना चाहिए। यह उपाय लगातार कई दिनों तक करते रहने से अवश्य लाभ होता है। प्याज़ और फिटकरी को पीसकर घाव में भरने और केवल प्याज़ का रस पिलाने से भी लाभ हो जाता है।

बन्दर के काटने पर–काटे स्थान पर प्याज़ और शहद एक साथ पीसकर लेप करना चाहिये अथवा उसकी पुल्टिस बांध देनी चाहिए। सुबह शाम ताज़ा ताज़ा लेप लगाना चाहिये।

सांप, बिच्छू के काटने पर–सफेद प्याज़ को पीसकर उसका मोटा लेप दिन में कई बार काटे स्थान पर चढ़ाना चाहिए और प्याज़ खूब खाना चाहिए।

तम्बाकू का विष–प्याज़ का रस नियमित रूप से सेवन करने से तम्बाकू का विष उतर जाता है और तम्बाकू पीने की आदत छूट जाती है।

मच्छर भागें–प्याज़ के रस को बिस्तर पर छिड़क देने से मच्छर भाग जाते हैं।

सांप बिच्छू भागें–घर में सफेद प्याज़ के टुकड़े बिखेर देने से घर से सांप बिच्छू भाग जाते हैं।

पतंगे दीपक पर न आयें–दीपक में प्याज़ के टुकड़े डाल देने से पतंगे उससे दूर २ रहते हैं।

लू लगने पर–लू लग जाने पर प्याज़ के रस को पूरे शरीर पर अथवा दोनों कनपटियों और छाती पर मालिश करने से लू का असर गायब हो जाता है। थोड़ा सा रस पिला भी देना चाहिये।

लू के दिनों में प्याज़ के ऊपर का मरा छिल्का हटाकर जेब में रखने से लू का असर नहीं होता है। छोटे बालकों के गले में उन दिनों

छोटे छोटे प्याज़ों की मालायें पहनानी चाहियें। ऐसा करने से उन्हें लू लगने का भय न रहेगा।

दर्द, चोट, मोच, सूजन पर—प्याज़ के रस से सेंकने अथवा उसकी लुगदी की पोटली बनाकर और गर्म तवे पर घी डालकर उसी पर पोटली को गर्म करके उससे सेंकने से हर किस्म की चोट, चपेट और दर्द को आराम हो जाता है।

बारूद के जले स्थान पर—बारूद से जले स्थान पर प्याज़ का रस लगा देना चाहिए। घाव हो गया हो तो प्याज़ को कूटकर उसमें भरना चाहिये।

अन्य प्रयोग

प्याज़ का रस और सिरका, दोनों को मिलाकर लोहे या स्टील के बर्तनों पर चुपड़ने के बाद थोडी देर ठहरकर मांज डालने से वे चमकने लगते हैं।

प्याज़ कब हानिकर है?

इसमें संदेह नहीं कि प्याज़ एक उपयोगी खाद्य और प्रभावशाली औषधि है, परन्तु इसका अनियमित और अत्यधिक सेवन खतरे से खाली नहीं रहता। कारण तब यह शरीर के नाड़ी मण्डल को इतना उत्तेजित कर देता है कि अस्वास्थ्यकर कामेच्छा की उत्पत्ति हो जाती है।

डाक्टर राबर्ट हचिनसन ने एक जगह लिखा है कि प्याज़ और असपरागस (एक प्रकार का गन्धयुक्त साग) ये ही दो खाद्य पदार्थ ऐसें हैं जिनसे यूरिक एसिड बन सकता है, अतएव उन मनुष्यों को जिनके शरीर में पेशाब सम्बन्धी यूरिक एसिड की मात्रा अधिक है अथवा जो इस एसिड से अधिक उत्तेजना महसूस करते हैं, उन्हें ये दो

सब्जियां नहीं खानी चाहियें। हृदय रोग, उपदंश, मूत्रकृच्छ्र, चर्म रोग, धातुक्षीणता, कफ, खांसी, श्वास रोग, क्षय, शोथ, गलगण्ड, कंठमाला, श्लीपद तथा गठिया आदि रोगों में प्याज़ का अत्यधिक सेवन उपर्युक्त कारणों से ही वर्जित है।

वर्षा ऋतु में भी प्याज़ अधिक मात्रा में नहीं खानी चाहिये। इसी प्रकार गर्भवती के लिए प्याज़ का सेवन सदैव हानिप्रद सिद्ध होता है।

धर्माचार्यों ने विशेषकर विद्यार्थियों और ब्रह्मचारियों के लिए प्याज़ को तामस वृत्तिकर माना है और इसके सेवन का सर्वथा निषेध करते हुए लिखा है–

लहसनं गृज्जनन्चैव, पलाण्डु पिंड मूलकं।
करम्मया निचान्यानि हीना निरस वर्णत्॥

(मार्कण्डेय पुराण प्रथम पाद अ० ३२, श्लोक १२)

दूसरा भाग

लेखक : श्री एंस० पी० मैहता
मेडिकल रिसर्च स्कालर
(प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्द्रा गांधी से ताम्रपत्र प्राप्तकर्ता)

प्याज के विभिन्न नाम—संस्कृत के प्राचीन लेखकों ने प्याज के गुण और आकार को देखकर यह नाम लिखे हैं।

यवनेष्ट, मुख दूषक, नोच भोज्य, लोहितकन्द, तीक्षणकेन्द, शूद्रपिय, कृमिपन, मुखगन्धक, बहुपत्र।

दूसरी भाषाओं में नाम—संस्कृत–पलाण्डू, बंगाली–पेयाज, पंजाबी–गंडा, वस्सल, मराठी–कांदा, गुजराती–डमुली, मारवाड़ी–कांदो, तामिल–वेल्ल वेगज्ञम, सिन्धी—डगरी। अंग्रेजी Onion व लेटिन Allium Cepa.

भारत के सबसे बड़े डाक्टर की राय

डा० कर्नल सर आर० एन चोपड़ा एम० डी० भूतपूर्व डायरेक्टर स्कूल आफ ट्रापीकल मेडिसन तथा डायरेक्टर ड्रग रिसर्च लेवारट्री जम्मूं कश्मीर जो वर्षों तक भारतीय दवाओं पर रिसर्च करते रहे हैं। अपनी प्रसिद्ध अंग्रेजी पुस्तक Indigenous Drugs of India में प्याज के बारे में इस प्रकार लिखते हैं :—

प्याज उत्तेजक, मूत्र लाने वाला, जमी हुई गाढ़ी वलगम को पतला करके निकालने वाला, सम्भोग और काम शक्ति को बढ़ाने वाला (Aphrodisiac), रुके और बन्द प्रदर को जारी करने वाला Emmenagrgue, पेट फूल जाने और पेचिश में लाभप्रद है।

इसमें एक विशेष बू वाला तेल होता है जो कमज़ोर दिल को ताकत देता और उसमें उत्तेजना पैदा करता, नाड़ी को शक्ति देता; दिल के सिस्टोलिक प्रेशर की खराबी और दिल में रक्त संचार करने में सहायक सिद्ध होता है। अन्तड़ियों और गर्भाशय की मांसपेशियों Muscles में उत्तेजना और शक्ति पैदा करता, पित्त Bile पैदा करने में सहायता देता, रक्त में शूगर (शक्कर) की मात्रा को कम करता है, इसलिये मधुमेह में लाभप्रद है। इसके तेल में एक तीव्र कीटाणुनाशक अंश Allyl-Propyl disulphide पाया जाता है। इस अंश के कारण ही प्याज़ से तेज़ बू आती और काटते समय आंखों में कष्ट होता है।

प्याज़ और लहसुन में क्षय रोग के कीटाणुओं को नष्ट करने का विशेष गुण है। विच्छू और दूसरे विषैले जन्तु काट लेने पर डंक के स्थान पर सख्त जलन, खुजली, शोथ और दर्द को दूर करते हैं। इनको सरसों के तेल में घोटकर गरम २ जोड़ों पर मलने से जोड़ों की सूजन, दर्द, जोड़ों का पथरा जाना तथा खुजली, दाद और दूसरे चर्म रोगों को आराम आ जाता है।

शरीर में पानी पड़ जाने और सूजन की चमत्कारी दवा

आज से दो हज़ार वर्ष के प्रसिद्ध प्राचीन रोमन विद्वान और लेखक Pliny पलीनी ने प्याज़ को पेट और शरीर के विभिन्न अंगों में पानी पड़ जाने के रोग को दूर करने के लिये बहुत ही लाभ-प्रद बताया है। प्याज़ बहुत अधिक मूत्र लाकर शरीर में जमा पानी निकाल देता और पानी पड़ जाने से शरीर की सूजन को दूर कर देता है।

पिछली शताब्दी में योरुप का एक डाक्टर प्याज़ का रस

निकालकर उसको दूध में मिलाकर अपने रोगियों को पिलाया करता था। प्याज मिला दूध दिन में कई बार पिलाते रहने से उसने फेफड़ों और शरीर के दूसरे भागों में पड़ा पानी निकालने में सफलता प्राप्त की।

पिछली शताब्दी में योरुप के एक दूसरे चिकित्सक ने प्याज के रस को दूध में मिलाकर वृक्क रोगों में ग्रस्त ऐसे रोगियों को पिलाना शुरू किया जिनको वृक्क रोगों के कारण मूत्र पूरी मात्रा में न आता था, जिसके कारण रोगी के शरीर के विभिन्न भागों पर सूजन आ गई थी और उन अंगों में पानी जमा हो गया था। दूध और प्याज का रस बार बार पिलाते रहने से वृक्क रोगियों को बहुत अधिक मात्रा में बार २ मूत्र आता, जिससे रोगियों के विभिन्न अंगों में पैदा शोथ दूर हो जाती। उसने इस साधारण टोटके से फेफड़ों में पड़ा पानी तक बिना आपरेशन निकाल लिया।

पिछले महायुद्ध में कई फौजी डाक्टरों ने फौजियों को प्याज और उसका रस काफी समय प्रयोग कराकर वृक्कों में ग्रस्त रोगियों के शरीर की शोथ और विभिन्न अंगों में इकट्ठा पानी निकाल लिया।

टाईफायड ज्वर दूर हो गया

टाईफायड ज्वर में प्याज विशेष चमत्कार दिखाता है। जैसा कि पहले लिखा जा चुका है कि कीटाणुओं को नष्ट करने तथा अन्तड़ियों पर प्याज विशेष प्रभाव रखता है। एक गरीब बच्चे को टाईफायड ज्वर था। उसका पिता डाक्टरों की फीस देने के अयोग्य था। वह उस बच्चे को प्याज पानी में उबालकर बार २ पिलाता रहा। कई दिनों तक इस पेय को देते रहने से बच्चे के टाईफायड ज्वर का जोश कम हो गया और बच्चे का ज्वर शीघ्र ही उतर गया। इससे टाईफायड ज्वर में अन्तड़ियों के घाव और शोथ दूर हो जाते हैं

श्रोर रोगी को अधिक कमज़ोरी नहीं होने पाती। इस ज्वर के मानसिक विकारों से भी रोगी बचा रहता है। प्याज़ का रस निकालकर ४–५ चम्मच दूध में मिलाकर बार बार यह दूध टाईफायड के रोगी को पिलाते रहें। इसके अतिरिक्त कोई ठोस भोजन रोगी को न खिलायें। इससे तीव्र टाईफायड ज्वर तक भी ३–४ दिन में दूर हो जाता है। मलेरिया ज्वर को उतारने के लिये भी यही योग बहुत ही सफल सिद्ध होता है।

इन्फ्लुएन्ज़ा की अनुभूत दवा

पहले महायुद्ध में फ्रांस के एक फौजी डाक्टर इन्फ्लुएन्ज़ा के रोगियों को रोग के शुरू से अन्त तक प्याज़ का ताज़ा रस गरम २ पानी में मिलाकर दिन में ३–४ बार पिलाया करते थे। जिससे शरीर की सख्त दर्दों, हड्डियां टूटना, जुकाम, खांसी, गले के कष्ट और ज्वर आदि को दो ही दिन में आराम आ जाता। उस फौजी डाक्टर ने सन् १९१७–१८ में प्याज़ के इस योग से सैंकड़ों रोगियों को मरने से बचा लिया। इन्फ्लुएन्ज़ा के जितने रोगियों की प्याज़ के इस योग से चिकित्सा की गई उनमें से किसी की भी मृत्यु न हुई। सर्दी जुकाम को दूर करने के लिए प्याज़ का रस आधा से एक छोटा चम्मच उबलते पानी में डालकर प्रातः सायं पीते रहने से एक दो दिन में ही यह रोग दूर हो जाता है।

शारीरिक और मर्दाना शक्ति पैदा करने वाला योग

प्राचीन यूनानी पुस्तकों में निम्न योग की मर्दाना, शारीरिक और मानसिक शक्ति प्राप्त करने के लिए बहुत प्रशंसा की गई है। इस योग को निरन्तर पीते रहने से बुढ़ापे में भी जवानी प्रतीत होने लग जाती, वज़न, सम्भोग शक्ति और रक्त बढ़ जाता है तथा मनुष्य

सर्दियों में रोगों से बचा रहता है। कई स्त्रियों से सम्भोग करने पर भी मर्दाना शक्ति कम नहीं होती। मुर्गी के एक अंडे में सुराख करके उसकी ज़र्दी और सफेदी चीनी के कप में डाल दें। अब इस खाली अंडे में सफेद प्याज़ का रस, घी, गाजर का रस और मधु बारी २ से भर और मिलाकर खूब फैंटकर प्रातः समय निरन्तर पीते रहें। बड़ी बड़ी पेटैन्ट दवाओं से भी अधिक लाभ पहुंचाता है।

क्षय रोग के कीटाणु नष्ट हो गए

रूसी डाक्टरों ने कई गिनीपिगों के रक्त की धार में क्षय रोग के कीटाणुओं का इन्जेक्शन लगाया। बाद में जब जानवरों में क्षय रोग के कीटाणु बढ़ने लग गये और उनमें क्षय रोग के लक्षण पैदा हो गये। तब इन कीटाणुओं और क्षय का संक्रमण समाप्त करने के लिए उनके रक्त में प्याज़ का रस इन्जेक्शन द्वारा प्रवेश कर दिया गया। जिससे उनके शरीर में क्षय रोग का संक्रमण, लक्षण और कीटाणुओं की सख्या समाप्त हो गई।

आंखों के रोगों की दवा

देहली में एक मुसलमान हकीम केवल आंखों के रोगियों की ही चिकित्सा करते हैं। उनके पास आंखों के रोगों के सैकड़ों रोगी प्रतिदिन आते हैं। मौसम आने पर आप कई मन सफेद प्याज़ खरीदकर उसका रस निकालकर सुर्मा तथा दूसरी दवाओं में रगड़कर इस दवा की हज़ारों शीशियां हर वर्ष बेच रहे हैं। प्याज़ के रस से बनी यह दवा निरन्तर आंखों में डालते रहने से बुढ़ापे और बड़ी आयु में भी दृष्टि तेज़ हो जाती, मोतिया, धुन्ध, आंखों से पानी बहना और आंखों के दूसरे रोग दूर हो जाते हैं।

भयानक घाव ठीक हो गया

फ्रांस के एक डाक्टर अपने एक रोगी का वृत्तान्त इस प्रकार लिखते हैं:—रोगी की जांघ तेज़ यन्त्र लग जाने से इतनी कट गई कि

जांघ की मांसपेशी (पट्ठा) बुरी तरह कट और फट गया था। डाक्टरी सहायता न मिल सकने के कारण उस ग्रामीण ने तमाम घाव पर प्याज को कूटकर लेप लगा लिया था। तीन दिन बाद जब मैंने उसके घाव को देखा तो प्याज़ के कीटाणुनाशक गुणों के कारण उसमें पीप बिल्कुल नहीं पड़ी थी और न ही दर्द और शोथ था। इतना बड़ा और भयानक घाव होने पर प्याज़ ने चमत्कार दिखाया था।

मसूढ़ों से रक्त और पीप आना

प्याज़ के रस पर एक रूसी डाक्टर काफी समय से अनुभव कर रहे हैं। लम्बे अनुभवों के बाद वह इस परिणाम पर पहुंचे हैं कि यदि दिन में १-२ बार एक एक प्याज़ खूब चबाकर मुंह में ४-५ मिनट तक रखा जाये तो इससे मुंह, जीभ, कण्ठ में कीटाणुओं की समाप्ति हो जाती है। ३-४ मिनट तक प्याज़ चबाते रहने से मसूढ़ों से पीप और रक्त आना, जीभ और मुंह के छालों तथा कीटाणुओं के संक्रमण को आराम आ जाता और तमाम कीटाणु मर जाते हैं।

यकृत रोग का एक भयानक रोगी स्वस्थ हो गया

कई बार यकृत में बहुत सूजन हो जाती है, काफी समय तक उचित चिकित्सा न करने से यकृत की तमाम सैलों में खराबी पैदा होकर तमाम यकृत तन्तुओं के रूप में बदल जाता है जिससे यकृत में रक्त संचार नहीं हो सकता। बाद में जिगर सुकड़कर बहुत छोटा हो जाता है। डाक्टर इस रोग को Cirrhosis of the Liver कहते हैं। एक यूरोपियन डाक्टर मैगोर ने इस रोग में ग्रस्त अपने एक रोगी को दिन में बार २ प्याज़ खाते रहने की सलाह दी। काफी दिनों तक प्याज़ खाते रहने से रोगी इस भयानक रोग से स्थायी रूप में स्वस्थ हो गया।

कई रोग दूर करने वाली दवा

रूसी डाक्टरों के अनुसन्धानों के अनुसार प्याज़ में एक तीव्र कीटाणुनाशक तेल पाया जाता है। जिसमें गन्धक बहुत अधिक मात्रा में होती है, जिसके कारण इसमें तीव्र कीटाणुनाशक गुण हैं। बहुत कम लोगों को इस बात का ज्ञान है कि प्याज़ में काफी मात्रा में खांड भी पाई जाती है। प्याज़ को गरम राख में दबाकर भून लेने और खाने से प्याज़ खांड की भांति मीठा हो जाता है और ऐसा लगता है जैसे कि लीची खाई जा रही है। प्याज़ में लोहा काफी मात्रा में होता है। वे रोगी जिनके शरीर में रक्त की कमी है, जिनका चेहरा पीला है, थोड़ा काम करने पर थकावट प्रतीत हो और सांस फूल जाये तो प्याज़ को भूनकर खाते रहने से उनके शरीर में अधिक रक्त पैदा हो जाता है। सफेद प्याज़ में अधिक गुण होते हैं। इसके बाद पीला प्याज़ अच्छा होता है। लाल प्याज़ गुणों में सफेद या पीले प्याज़ की अपेक्षा कमजोर होता है। छोटे और मध्यम साईज़ के प्याज़ बड़े प्याज़ों से अधिक गुणकारी होते हैं।

प्याज़ का होमियोपैथिक टिंक्चर

प्याज़ के रस को एल्कोहल में मिलाकर उसको वर्षों तक सुरक्षित रखा जा सकता है। होमियोपैथी में प्याज़ का टिंक्चर बनाया जाता है। जिसको एलियम सेपा (Allium Cepa) कहते हैं। आप इस दवा से निम्न रोग दूर कर सकते हैं।

तीव्र जुकाम में जबकि नाक से सख्त कड़वा पानी निकले, आंखों से बहुत अधिक पानी बहता रहे। नाक के अन्दर मस्सा पैदा हो गया हो जिसके कारण नाक से सांस लेना तक कठिन हो, नाक से इतना तेज़ पानी बहे जिससे ऊपर का होंट लाल हो जाये, जल जाये और उसमें घाव पैदा हो जायें। गाने वालों की आवाज़ बैठ

जाये। गले से आवाज़ न निकल सके तो इससे उनका गला खुल जाता है और उनकी आवाज़ सुरीली हो जाती है।

आंख दुखना, आंख की लाली, आंखों से पानी बहना जिससे आंखों में खराश न हो।

जब ज़ुकाम का प्रभाव गले में हो जाने से गले में कांटे चुभने, खराश होने से रोगी को सख्त कष्टदायक खुष्क खांसी हो, रोगी ऐसा अनुभव करे जैसे खांसी उसका गला फाड़ देगी, रोगी बार २ अपने गले को पकड़े रहे, इसके साथ ही आंखों से पानी बहता रहे।

स्त्री को प्रदर शुरू होने पर और प्रदर के दिनों में सिर दर्द हो जाये। परन्तु प्रदर आ चुकने के बाद सिर दर्द दोबारा शुरू हो जाये। उसको चारपाई से उठने पर बहुत अधिक छींके आयें।

जब रोग शाम को और गरम कमरे में जाने पर बढ़ जाये, परन्तु सर्द कमरे में जाने और खुली वायु में रोग घट जाये। इन लक्षणों में इस दवा के मदर टिंक्चर की ५ से २० बूंद थोड़े पानी में मिलाकर दिन में ३–४ बार देते रहें। एक औंस दवा मूल्य दो रुपया से आप कई रोगियों की चिकित्सा कर सकते हैं।

प्याज़ के कुछ सरल चमत्कारी योग

(१) फोड़े, फुन्सियों, जवानी के कील, मुहासों, कन्ठमाला, पुराने फोड़े, नासूर पर प्याज़ का रस या घी में तलकर गरम २ प्याज़ प्रतिदिन बांधने से उनकी दर्द, पीप कम हो जाती और वह शीघ्र भर जाते हैं।

(२) नींद न आने पर गरम राख में भुने प्याज़ का रस रात को सोते समय पी लेने या प्याज़ के बीजों की चाय पी लेने से गहरी नींद आ जाती है। अफीम खिलाने पर यदि नींद न आये तो इस साधारण टोटके से शर्तिया नींद आ जायेगी।

(३) नाक से खून आने पर २–४ बूंद प्याज़ का रस नाक में

टपकायें, प्याज़ काटकर गले में बांधें।

(४) प्याज़ के रस में पारा डालकर इतनी ज़ोर से खरल करते रहें कि गोली बनाने योग्य हो जाये। इसको मर्दाना इन्द्री पर सुपारी को छोड़कर लेप करें। खुष्क हो जाने पर सम्भोग करें। इससे इन्द्री में बहुत अधिक जोश और स्तम्भन शक्ति पैदा होती है। रति आनन्द प्राप्त करने के लिये गुप्त भेद है।

(५) प्याज़ को कूटकर या बारीक काटकर उसमें बराबर मधु मिलाकर ढककर रात भर पड़ा रहने दें। दिन को शर्बत को पृथक कर लें। इस शर्बत को चटाने से बच्चों की खांसी, सांस कठिनाई से आना, छाती में दर्द को आराम आ जाता है।

(६) प्याज़ को उपलों की गरम राख में दबाकर रख दें। थोड़ी देर में यह गलकर नरम हो जायेंगें। तब इनका छिलका दूर करके इनको खायें। रसभरी की भांति सुन्दर, मीठा और स्वादिष्ट बन जाता है। इसकी बू और तेज़ी भी दूर हो जाती है। प्रातः सायं इसको खाते रहने से आप काफी रोग दूर कर सकते और शरीर में नई शक्ति प्राप्त कर सकते हैं। इसको कूटकर रस निकालकर भी पिया जा सकता है। इस विधि से प्याज़ से घृणा करने वाले भी इसको खा सकते हैं।

(७) डाक्टर देसाई लिखते हैं—प्याज़ उष्ण, लघु, उत्तेजक, अनुलोमिक, कफ निकालने और मूत्र लाने वाला है। इसके प्रयोग से फेफड़ों में जमी गाढ़ी बलगम (कफ) पतली होकर आसानी से निकल जाती है। रोगी की घबराहट दूर हो जाती और फेफड़ों में बार २ कफ पैदा होनी रुक जाती है।

(८) प्याज़ शरीर के अन्दर वात, पित कफ तीनों दोषों में खराबी आ जाने से पैदा कष्टों और रोगों को दूर करता है।

॥ समाप्त ॥ २०C ॐ

चिकित्सा सम्बन्धी पुस्तकें

संसार के प्रसिद्ध वैद्यों, डाक्टरों, हकीमों के
गुप्त अनुभूत योग (चतुर्थ संस्करण)

इस पुस्तक में यूरोप, अमरीका और भारत के प्रसिद्ध वैद्यों, डाक्टरों, हकीमों के गुप्त अनुभूत योग लिख दिये गये हैं। जिनसे उन्होंने लाखों रुपया कमाया। सैकड़ों में से कुछ शीर्षक—माडर्न पेटेण्ट दवाओं से चिकित्सा, एलोपैथिक, वैद्यक के मिले जुले सफल योग, दवा सुंघाते ही हाई ब्लड प्रेशर दूर, दिल फेल होने को मिनटों में आराम, पहली मात्रा से टाईफायड ज्वर दूर, बेहोश रोगी को होश में लाने वाली औषधि, एक ही मात्रा से मलेरिया दूर, कारबन्कल विना आपरेशन ठीक, बीस बीस रोग दूर करने वाली दवायें, स्वामी रत्नागिरी की ताकत की वह दवा जिससे बूढ़े ग्वाले ने ३ शादियां कीं, सूखे बच्चों को मोटा ताजा बनाने वाली दवायें, क्षय की अचूक दवा, एक ही मात्रा से न्यूमोनिया दूर, चित्रकूट की श्वास रोग की दवा, पैसा २ की सफल दवायें, सन्यासियों की अनुभूत दवायें, पुत्र होने की शर्तिया दवा, डा० सर विलियम मूर सिविल सर्जन के योग, सरकारी अस्पतालों के योग, गुर्दे (वृक्क) के दर्द को तुरन्त आराम, गर्भपात की अचूक दवा, मिर्गी की सफल दवा, मोटापा की दवा, कुष्ठ रोग की शर्तिया दवा। इस प्रकार के वैद्यक, यूनानी, एलोपैथिक, होमियोपैथिक के पांच सौ सफल अनुभूत योग लिखे गये हैं। मू० तीन रुपया ५० पैसा।

पैसा २ की सफल दवायें—लेखकएस०पी० मेहता। इस पुस्तक के पहले उर्दू संस्करण पर यू० पी० सरकार ने १०० रुपये इनाम और यू० पी० के गवर्नर ने प्रमाण पत्र दिया। इस पुस्तक में दो सौ

के लगभग मनुष्य रोगों की पैसा २ की या मुफ्त बन सकने वाली हज़ारों चमत्कारी सफल अनुभूत दवाओं के सुगम योग लिखे गये हैं। जिनसे बड़े २ पुराने रोगों को दूर किया जा सकता है। प्रसिद्ध वैद्यों, हकीमों की पैसा २ की दवायें, साधुओं, सन्यासियों के टोटके, तिब्बिया तथा आयुर्वेदिक कालेजों के प्रोफैसरों तथा प्रिंसिपलों की पैसा २ की दवायें, प्राचीन वैद्यक ग्रन्थों के योग, जड़ी बूटियों के चमत्कार, पैसा २ की दो हज़ार के लगभग अनुभूत दवायें। २ रु० ५० पैसा।

नाड़ी परीक्षा—रोगी की नाड़ी को देखकर बिना पूछे उसको रोग बताकर चकित करना, नाड़ी परीक्षा पर प्रसिद्ध वैद्यों, हकीमों और डाक्टरों के अनुभव, नाड़ी परीक्षा की विभिन्न विधियां, सम्भोग व्यायाम, मौसम और भोजनों का नाड़ी पर प्रभाव और विभिन्न रोगों में नाड़ी की गतियों में अन्तर का वृतान्त, दूसरा संस्करण १॥)

प्राकृतिक चिकित्सा के चमत्कार—लेखक डाक्टर एस० पी० मेहता मेडिकल रिसर्च स्कालर। मनुष्यों के शरीर से विषैले दोष निकालकर बड़े बड़े पुराने असाध्य रोग दूर करने की सरल विधियां, लम्बी आयु प्राप्त करने और स्वस्थ बने रहने की विधियां, उपवास, फलों और सब्जियों के रसों से बड़े २ रोगों की चिकित्सा, सूरज की किरणों, विटामिनों, खनिज और प्रोटीन खाद्यों से चिकित्सा, ऐनक छोड़ देने और बुढ़ापे तक दृष्टि तेज रखने के गुप्त भेद। इस पुस्तक की सहायता से चिकित्सक प्राकृतिक विधियों से बड़े २ असाध्य रोग दूर करने में सफल हो सकते हैं। मूल्य दो रुपये।

मेडिकल हाउस ३६५६ कुतब रोड, देहली

मुद्रक—तिलक प्रिंटिंग प्रेस, देहली

चिकित्सा सम्बन्धी पुस्तकें

माडर्न पेटेन्ट ड्रग्ज़—डाक्टर जे० पी० सक्सेना एम० डी०। संसार प्रसिद्ध औषधि निर्माता फर्मे जैसे सिवा, रोश, सैन्डोज़, गायगी, लेडरली, पार्क डेविस और ५० अन्य कम्पनियों की लगभग १२०० पेटेन्ट औषधियों और इन्जेक्शनों के योग, विभिन्न रोगों में उनका प्रयोग, लाभ, मात्रा और उनसे चिकित्सा पर जानकारी। ४२४ पृष्ठ तीसरा संस्करण ८ रुपये।

प्रेसक्रिप्शन बुक—लेखक डाक्टर ए० पी० गौड़ एम० बी० बी० एस०। वैद्य, डाक्टर और चिकित्सक जो अपने रोगियों की चिकित्सा एलोपैथिक औषधियों से करने में विशेषज्ञ बनना चाहते हैं। उनके पास इस पुस्तक का होना अति आवश्यक है। इस पुस्तक में तमाम मनुष्य रोगों के ऐसे ऐसे सफल योग लिख दिये गयें हैं, जिनको योरुप, अमरीका और भारत के प्रसिद्ध डाक्टर और सरकारी अस्पतालों के इन्चार्ज लाखों रोगियों पर प्रतिदिन प्रयोग कर रहे हैं। हर रोग के नई २ माडर्न पेटैण्ट दवाओं, मिक्सचरों कम्बीनेशन थैरापी और इन्जेक्शनों के १०-१५ चोटी के सफल डाक्टरी योग लिख दिये हैं जिनके प्रयोग कराते ही रोग कम होने लग जाता है। १५० से अधिक मनुष्य रोगों के २००० से अधिक डाक्टरी योग। १९२ पृष्ठ सजिल्द मूल्य ४ रुपया।

एलोपैथिक पेटेन्ट चिकित्सा—डाक्टर बी० डी० पसरी। यूरोप, अमरीका की माडर्न पेटेन्ट औषधियों से तमाम रोगों की चिकित्सा। प्रत्येक रोग की आठ दस सर्वश्रेष्ठ पेटेन्ट औषधियां जिनकी पहली ही मात्रा से पुराने तथा जटिल रोग घटने लग जाते हैं। तीन रुपया।

मेडिकल हाउस ३६५६ कुतब रोड, देहली